इंडिया टीबी रिपोर्ट 2020 पत्रकारों के लिए साधन

इंडिया टीबी रिपोर्ट 2020 को 24 जून 2020 को राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) द्वारा जारी किया गया था। यह रिपोर्ट 2025 तक टीबी को खत्म करने के राष्ट्रीय लक्ष्य की दिशा में हुई प्रगति का बयान करती है और साथ ही वर्तमान में संबोधित की जा रही महत्वपूर्ण चुनौतियों का भी वर्णन करती है। यह दस्तावेज इंडिया टीबी रिपोर्ट 2020 से कुछ प्रमुख अपडेट पर प्रकाश डालता है और यह टीबी पर लिखने वाले पत्रकारों के लिए एक संसाधन है।

प्रमुख बातें

1. टीबी की अधिसूचना* में हुई वृद्धि

*टीबी से ग्रसित लोगों को अधिसूचना करना भारत सर्कार द्वारा २०१२ में अनिवार्य किया गया था

कुल मिलकर **24.04 lakh** टीबी से ग्रसित लोगों की अधिसूचना की गई

>15 lakh

मर्द (लगभग 62%)

>8 lakh

औरतें (लगभग 37%)

>2000

ट्रांसजेंडर (1% से कम)

14% एनटीईपी को अधिसूचना में औसत वृद्धि

6.78 lakh लोग प्राइवेट क्षेत्र में अधिसूचित

35% प्राइवेट क्षेत्र में टीबी अधिसूचना की औसत वृद्धि

आधे से ज़्यादा टीबी से ग्रसित व्यक्ति पांच राज्यों से अधिसूचित

20% उत्तर प्रदेश

9% महाराष्ट्र

8% मध्य प्रदेश

7% राजस्थान

7% बिहार

2. टीबी से ग्रसित लोगों की अनुमानित संख्या और अधिसूचित संख्या के बीच अंतर (लापता मामले*) कम हो रहा है।

10 lakh टीबी से ग्रसित लापता लोग 2017 में

5.4 lakh टीबी से ग्रसित लापता लोग 2019 में

* * मिसिंग मामलों से तात्पर्य है: अनुमानित मामलों की संख्या और टीबी कार्यक्रम को अधिसूचित की गई संख्या के बीच का अंतर, जो कि भारत में टीबी रिपोर्ट 2020 में दी गई 199/लाख की आबादी की इन्सिडेन्स पर आधारित है।

3. एक्टिव केस फाइंडिंग की मदद से हज़ारों टीबी से ग्रसित लोगों की पहचान हुई

27.74 crore अति संवेदनशील आबादी का मौखिक उपचार (स्क्रीनिंग), 23 राज्यों के 337 ज़िलों में

62,958 टीबी से ग्रसित व्यक्तियों की पहचान

4. बच्चों में टीबी की जांच हुई बेहतर

8% पिछले वर्ष की तुलना में टीबी से ग्रसित बच्चों की संख्या में वृद्धि

5. टीबी के कारण होने वाली मृत्यु स्थिर

79,144 टीबी के कारण मृत्यु

4% 2019 और 2018 में मृत्यु दर

6. अधिसूचित टीबी से ग्रसित लोगों के टीबी उपचार की सफलता दर बढ़ी

79% 2018 में सार्वजनिक क्षेत्र में उपचार की सफलता दर

84% 2019 में सार्वजनिक क्षेत्र में उपचार की सफलता दर

35% 2018 में प्राइवेट क्षेत्र में उपचार की सफलता दर

71% 2019 में प्राइवेट क्षेत्र में उपचार की सफलता दर

4% लॉस्ट टू फॉलो अप (सार्वजनिक और प्राइवेट क्षेत्र में कुल)

7. टीबी से ग्रसित लोगों में सह-रुग्णता के लिए बढ़ी जांच

81% टीबी से ग्रसित लोगों की एचआईवी को पता था कि उन्हें एचआईवी है या नहीं, जो 2018 में 67% था

>3 lakh एचआईवी से ग्रसित लोगों में 2019 में टीबी निरोधक चिकित्सा शुरू की गई

64% का उच्च ब्लड प्रेशर के लिए जांच किया गया, जो सार्वजनिक क्षेत्र में अधिसूचित हुए

8. पोषण के लिए सहायता का कवरेज बढ़ा

>28 lakh — 1 जनवरी 2019 से 31 दिसंबर 2019 तक निक्षय पोषण योजना के लाभार्थी

>₹520 crore — का वितरण निक्षय पोषण योजना के तहत इस अवधि में

9. ड्रग रेसिस्टेंट टीबी (डीआर-टीबी)

711 — डीआर-टीबी केंद्र 2019 में कार्यात्मक बने, जिसमें डीआर-टीबी उपचार के लिए 154 नोडल डीआर-टीबी केंद्र शामिल हैं

1180 — CBNAAT केंद्र टीबी और रिफाम्पिसिन प्रतिरोध के लिए जिला और उप जिला स्तरों पर विकेंद्रीकृत परीक्षण प्रदान करते हैं

35.31 lakh — CBNAAT जांचें की गई, जो पिछले वर्ष से 47% अधिक हैं

10. युनिवेर्सल ड्रग सेंसिटिविटी टेस्टिंग (यूडीएसटी) की उपयोगिता

नीचे दिए गए आंकड़े दवा संवेदनशीलता (दवा प्रतिरोधक जांच) के अनुसार उपचार प्राप्त करने वाले लोगों की संख्या में सुधार को दर्शाते है।

58% — अधिसूचित टीबी से ग्रसित लोगों की दवा प्रतिरोधक जांच हुई

100% — वृद्धि अधिसूचित लोगों की जिनका यूडीएसटी किया गया (पिछले साल के मुकाबले)

68% — टीबी से ग्रसित लोगों का सार्वजनिक क्षत्र में दवा संवेदनशीलता जांच हुआ

28% — टीबी से ग्रसित लोगों का प्राइवेट क्षत्र में दवा संवेदनशीलता जांच हुआ

11. भारत में डी-आर टीबी के नए रेजिमेन की तरफ बढ़े कदम

इंडिया टीबी रिपोर्ट 2020 में उन लोगों की संख्या के बारे में भी जानकारी दी गई है जो कि एमडीआर-टीबी की कम समय तक लिए जाने वाली रेजिमेन पर शुरू किए गए थे। इस रेजिमेन में डेलमनीड और बेडाक्विलाइन जैसी नई दवाओं के साथ-साथ पूर्ण रूप से मौखिक रेजिमेन (खाये जाने वाली दवाइयां) शामिल हैं। भारत ने लंबे, कम प्रभावी पारंपरिक आहार से दूर होने में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

66,255 मल्टी ड्रग रेसिस्टेंट (एमडीआर) या रिफाम्पिसिन रेसिस्टेंट (आरआर) टीबी से ग्रसित लोगों की अधिसूचना की गई

71% को (जिनका एमडीआर या आरआर टीबी का इलाज शुरू हुआ है) कम समय तक लिए जाने वाले रेजिमेन पर शुरू किया गया। यह पिछले वर्ष की तुलना में 28% ज़्यादा था।

3% को (जिनका एमडीआर या आरआर टीबी का इलाज शुरू हुआ है) पूर्ण रूप से खाई जाने वाली दवाइयों की रेजिमेन पर डाला गया

60% एमडीआर टीबी से ग्रसित लोगों का इलाज (जिन्हें कम समय वाली रेजिमेन पर डाला गया था) 2018 में सफलता से पूर्ण हुआ। दूसरी ओर, पुराने रेजिमेन से 2017 में केवल 48% का इलाज पूरा और सफल हुआ था।

16,000 लोगों की पहचान, जिन्हें आइसोनियाजिड मोनो/पॉली रेसिस्टेंट टीबी है, जो पिछले साल के मुकाबले 100% अधिक था

82% का इलाज शुरू किया गया

76% लोगों ने अपना इलाज सफलतापूर्वक पूरा किया (जिनका आइसोनियाजिड मोनो रेसिस्टेंट टीबी के लिए इलाज शुरू किया गया था)

2323 लोगों की 2019 में पहचान, जिन्हें एक्सटेंसीवेली रेसिस्टेंट टीबी (एक्सडीआर-टीबी) है

5% का इलाज पूर्ण रूप से खाई जाने वाले रेजिमेन में शुरू किया गया

83% का इलाज शुरू किया गया

आंकड़ों का स्रोत: इंडिया टीबी रिपोर्ट 2020

Designed and developed by

REACH
leading the fight against TB

Contact Us: Phone: 044-28132099 / 45565445 | Email: media4tb@gmail.com
Website: www.reachtbnetwork.org | Twitter: @SpeakTB | Facebook: www.facebook.com/SpeakTB
TB Helpline: 9962063000 | PP Helpline: 9790977331